RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-06
June-2017
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

हिन्दी की पढ़ाई का आधुनिकीकरण

Dr Sushma Garg

Assistant professor, Hindu kanya Mahavidyalaya Jind, Haryana

आधुनिकीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके सहारे समाज आधुनिकता के लक्ष्य को साधता है, भाषिक समृद्धि की दृष्टि से होने वाला हर परिवर्तन या बदलाव उस भाषा का विकास है, पर भाषा विकास के सीमा क्षेत्र में आने वाला हर परिवर्तन आधुनिकीकरण की संज्ञा पाए, यह आवश्यक नहीं है। सर्वप्रथम आधुनिक व आधुनिकीकरण शब्द को समझ लेना आवश्यक है तभी हम किसी भी भाषा से संबंधित आधुनिकता के तरीकों को समझ सकेंगें।

आधुनिक शब्द ''अधुना'' (अब) से बना है जो वर्तमान का वाचक है। आधुनिक शब्द नवीनता या परिवर्तन का बोधक है।

अभयकुमार दूबे के मत में – आधुनिकता का अर्थ है: जीवन के लगभग हर क्षेत्र में समकालीन को परम्परागत से अलग समझना।

धर्मवीर भारती के शब्दों में –''आधुनिकता वर्तमान संदर्भों में पूर्णता की खोज है और वर्तमान का पूर्ण प्रस्फुटन''

वास्तव में आधुनिकतावाद का सामान्य अर्थ है – आधुनिक युग का दर्शन और संस्कृति। आधुनिकतावाद का युग यूरोप में उन्नीसवीं सदी से शुरू होकर बीसवीं सदी के पूर्वाद्ध तक माना जाता है। हिन्दी में आधुनिकतावाद के उदय को लेकर अनेक प्रकार के मत प्रचलित है। पश्चिमी चिंतन से प्रभावित लोग भारतेन्दु युग से आधुनिकता का उदय मानते है और वहीं कुछ लोग आधुनिकतावाद का संबंध प्रयोगवाद और नयी कविता से जोड़ते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि हिन्दी में आधुनिकतावाद का जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में उत्पन्न नवीन संवेदना और नयी चिंतन दृष्टि के साथ हुआ।

वास्तव में भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार है जबकि आधुनिकतावाद विज्ञान जनित बुद्धि या मनोवृत्ति है जो तर्कों पर आश्रित रहती है और इसी संदर्भ में आधुनिकीकरण अधिकांशत समाज के आर्थिक ढ़ांचे से संबंधित प्रक्रिया है और किसी भी समाज के आर्थिक विकास में वैज्ञानिक औद्योगिक व तकनीकी प्रगति का विशेष हाथ होता है।

ठीक इसी प्रकार से प्रत्येक भाषा का विकास व साहित्य उस युग की तत्कालीन परिस्थितियों व वातावरण के आधार पर निर्मित होता है। अतः आधुनिकीकरण से हमारा तात्पर्य है सभी प्रकार की संकीर्णताओं से दूर हटकर युगानुरूप अपने आप को व्यवस्थित कर आधुनिक बनाना है।

इस युग की आधुनिक भाषाओं में हिन्दी महत्वपूर्ण भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। हर आधुनिक भाषा, युग की आवश्वकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप अपना शब्द व अर्थ संयोजन करती है। हिन्दी इस दृष्टि से उपयुक्त भाषा है क्योंकि हिन्दी एक विकासशील समाज की भाषा है, एक बहुभाषी समाज की भाषा होने के साथ–साथ हिन्दी भारत देश की राजभाषा भी है।

एक विकासशील समाज की भाषा होने के कारण हिन्दी भाषा की पढ़ाई का आधुनिकीकरण अत्यन्त आवश्यक कार्य हो जाता है क्योंकि तकनीकी विकास, वाणिज्य–व्यापार की व्यवस्था सभी नए क्षेत्र खुलते है और इन क्षेत्रों में भाषा के उपयोग की आवश्यकता पड़ती है। इन क्षेत्रों में शिक्षण–प्रशिक्षण के क्षेत्रों का विस्तार भी होता है। हिन्दी वर्तमान समय में व्यापार–वाणिज्य और बाजार की सशक्त भाषा है।

उसे अधिकाधिक उपयोग में लाने हेतु सभी साहित्येत्तर क्षेत्रों जैसे वाणिज्य, तकनीकी, जन–संचार, विज्ञान, मानविकी आदि सभी क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया जाना चाहिए और हिन्दी को केवल हृदय की नहीं, पेट की भाषा भी बनाना है और रोजगार से जोड़ना है।

इसीलिए हिन्दी विषय की पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों हेतु पाठ्यक्रम में मीडिया से संबंधित पेपर हो, जिसमें व्यावहारिक अध्ययन ज्यादा से ज्यादा हो, न कि सैद्धान्तिक जिन्हें विद्यार्थी सीखकर भविष्य में रोजगार प्राप्त कर सके। हिन्दी क्योंकि बहुभाषी समाज की भाषा भी है। इसी नाते इसकी व्यावहारिकता को बढ़ाने हेतु हिन्दी भाषा में सभी संस्कृतियों का वाङ्मय उपलब्ध करवाया जाए और यह कार्य तभी संपन्न हो सकेगा जब हिन्दी में अन्य भाषाओं का साहित्य भी अनुदित होकर आए।

इसी तरह हिन्दी भाषा अनुवाद की भाषा भी बनेगी और वाङ्मय का आधार भी बनेगी। जिसके फलस्वरूप संदर्भ ग्रथों के निर्माण में हिन्दी को बढ़ावा मिलेगा व विद्यार्थी इस कार्य हेतु पुस्तकालय का प्रयोग करेंगे व रिसर्च आधारित पुस्तकों का निर्माण होगा और हिन्दी पुस्तकालयों की भाषा भी बनेगी। हिन्दी भाषा के आधुनिकीकरण की इस प्रक्रिया में बहुभाषी समाज के मौखिक संप्रेषण के साधन के रूप में भी हिन्दी का विकास होगा। इसी प्रक्रिया के तहत अखिल भारतीय स्तर पर आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के कार्यक्रम, साहित्य सृजन तथा साहित्यिक गोष्ठियाँ, नाटक तथा फिल्म आदि क्षेत्रों में नये प्रयोजनों के लिए हिन्दी भाषा की पढ़ाई का विकास होगा।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

हिन्दी भाषा की पढ़ाई को बढ़ावा देने हेतु वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग का पुर्नगठन किया जाना चाहिए, साथ ही शब्द निर्माण के मामले में अब तक की राजनीतिक नीति को छोड़कर, ऐसी शब्दावली का निर्माण किया जाए जो सामान्य व आमजन के समझ में आ सके व व्यावहारिक तौर पर प्रयोग लायी जा सके। महान भाषाविद् रघुवीर जी ने हिन्दी के छह लाख शब्द गढ़े, पर यह भी सच है कि उन्होंने कई ऐसे शब्द भी बनाए, जिसके चलते आजतक हिन्दी का मजाक उड़ाया जाता है। इसीलिए हिन्दी के सरकारी शब्दकोशों और दस्तावेज़ों से कठिन शब्द को हटाए, बिना हिन्दी के विकास की आधुनिकीकरण की प्रक्रिया सफल नहीं हो सकती वैसे भी शब्दों के मामले में, किसी भी भाषा के प्रचलित शब्दों को स्वीकारने की नीति होनी चाहिए, चाहे कुछ शब्द ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में अच्छे हो तो, उन्हें धारण किया जाना चाहिए। अप्रचलित व कठिन शब्दों के प्रयोग के अलावा प्रचलित शब्दों को स्थान दिया जाना चाहिए।

केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा 10वीं के बजाय 12वीं कक्षा तक हिन्दी भाषा व साहित्य को अनिवार्य भाषा बनाना चाहिए ताकि विद्यार्थी हिन्दी भाषा को ठीक प्रकार से समझ व सीख सके।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के तहत ही वर्तमान समय कम्प्यूटर, लैपटॉप व स्मार्टफोन का है तो स्कूलों में बच्चों को कागज, कॉपी पर हिन्दी लिखना, सिखाने के साथ–साथ, उन्हें हिन्दी की टाईपिंग में भी दक्ष बनाए ताकि विद्यार्थी हिन्दी टाईपिंग के अभ्यास से वर्तमान समय की प्रतिस्पर्धा में स्वयं को खड़ा कर सके।

हरियाणा सरकार, केन्द्र सरकार व हिन्दी भाषा क्षेत्रों की सरकारों द्वारा मूल कामकाज हिंदी भाषा में किया जाना चाहिए। सरकारें अपने सभी दस्तावेजों और वेबसाईटों का सहज हिंदी में अनुवाद अनिवार्य रूप से कराए। यदि ऐसा प्रयत्न सरकारों द्वारा कर लिया जाएगा तो हम अंग्रेजी के गुलाम होने से बच जाएँगें व अनेकों रोजगार के बड़े अवसर भी पैदा कर सकेंगें।

हिन्दी की पढ़ाई को बढ़ावा देने हेतु इंटरनेट पर हिंदी भाषा की सामग्री को पर्याप्त मात्रा में डाला जाना चाहिए, क्योंकि इंटरनेट पर हिंदी भाषा में सामग्री का अभाव है। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह अपने संसाधनों व निजी प्रयासों से सभी विषयों से संबंधित, हिंदी में सामग्री तैयार करवाकर इंटरनेट पर डलवाएं। इस कार्य हेतु हिंदी भाषा में, शोध करने वाले विद्यार्थियों की भी, सहायता ली जा सकती है। अनेक हिंदी भाषी भाषाविद् भी इस कार्य में अपना योगदान देकर हिंदी भाषा के भंडार को समृद्ध कर सकते है।

हिंदी की पढ़ाई में बहुत बार वर्तनी से जुड़ी विसंगतियाँ भी देखने को मिलती है। इन विसंगतियों को दूर करने हेतु आवश्यक कदम उठाकर वर्तनी के मानदण्ड व मानक सुनिश्चित किए जाने चाहिए। कुछ आवश्यक कार्य हिंदी की पढ़ाई में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में सहयोग दे सकते है। जो इस प्रकार से हैः–

हिंदी भाषा को कंप्यूटर से जोड़ कर पढ़ाया जाना चाहिए। वर्तमान समय में इंटरनेट व कंप्यूटर का बोलवाला है तो विद्यार्थियों को हिंदी भाषा में एप बनाने की दक्षता का विकास किया जाना चाहिए। कंप्यूटर पर कार्य करने हेतु सभी फॉन्टस की विधिवत् जानकारी का व्यावहारिक ज्ञान देकर विद्यार्थियों के अंदर कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाया जाना चाहिए, ताकि हिंदी में भी अंग्रेजी भाषा की तरह ही कार्य हो सके व हिंदी भाषा के विकास व विस्तार को सुदृढ़ता प्राप्त हो। सभी विद्यालयों व महाविद्यालयों में भाषा लैब का होना अनिवार्य है ताकि सभी विद्यार्थियों को भाषा लैब के माध्यम से शब्दों के सही उच्चारण का ज्ञान हो सके। हिंदी पाठ्यक्रम में एक पेपर रिसर्च बेस पर भी आधारित होना चाहिए ताकि विद्यार्थी कंप्यूटर व इंटरनेट पर जानकारी खोजना सीख सके व उसका उत्तम उपयोग कर भाषा का उचित ज्ञान प्राप्त कर सके। पाठ्मक्रम में एक पेपर अनुवाद का होना चाहिए ताकि विद्यार्थी अनुवादक बन सके व जीविका कमा सके। एक पेपर जन–संचार, पत्रकारिता व मीडिया से संबंधित हो जिसमें व्यावहारिक तौर पर सभी कार्यों जैसे टिप्पणी लिखना, फाईल बनाना, संक्षेपण व पल्लवन तैयार करना, पत्राचार की व्यावहारिक ज्ञान संबंधी जानकारी दी जाए, ताकि विद्यार्थी दफ्तरों, सरकारी व अर्ध सरकारी कार्यालय में इन कार्यों को सीखने के उपरांत रोजगार प्राप्त कर सके।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के अंर्तगत हिंदी भाषा से संबंधित सारे पाठ्यक्रम की समीक्षा की जानी चाहिए। क्योंकि वर्तमान पाठ्यक्रम केवल साहित्य व साहित्यकारों से संबंधित विधाओं की जानकारी ही देता है परंतु उसमें व्यावहारिक ज्ञान व रोजगार के अवसर नाममात्र के हैं जोकि विद्यार्थियों के भविष्य को लेकर असुरक्षा की भावना से युक्त है।

इसके अलावा Job Oriented Courses को पाठ्मक्रम के साथ जोड़ा जाए ताकि विद्यार्थी भविष्य में सुरक्षित जीवन यापन कर सके। साहित्य व साहित्यकारों की विचारधारा से अवगत करवाने व समाज की सामाजिक आर्थिक राजनीतिक स्थिति से अवगत करवाने हेतु सभी महत्वपूर्ण कवियों और लेखकों जैसे कबीर, सूर, गुप्त, निराला, अज्ञेय आदि सभी प्राचीन, मध्य व आधुनिक काल के कवियों की केवल 5–5 कविताएं ही पाठ्यक्रम में दी जाए।

इसके इलावा समय–समय पर प्राध्यापकों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें उन्हें कंप्यूटर पर हिंदी एप बनाना सिखाना, फॉन्टस चलाना, हिंदी टाईपिंग का अभ्यास करवाना तथा दफ्तरों से संबंधित कार्य जैसे फाईलों पर टिप्पणी बनाना सिखाना, आदि कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि प्राध्यापक स्वयं इन कार्यों को करने में सक्षम होने पर कक्षा में विद्यार्थियों को सिखा सके।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

कविता, कहानी व अन्य विधाओं के लेखन व पाठन में रूचि विकसित करने हेतु विभिन्न प्रकार की तकनीकों का उपयोग कर विद्यार्थियों को अवसर देना भी, साहित्य के प्रति एक आदर्श कदम होगा जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी हिंदी की पढ़ाई के माध्यम से न केवल साहित्यकारों को समझेंगे व पढ़ेगें अपितु साहित्य के माध्यम से समाज की सभी गतिविधियों व विचारधारा से अवगत हो सकेंगे।

साहित्य में निपुण विद्यार्थियों की कुशलता के विकास हेतु सरकार द्वारा समय–समय पर कहानी व कविता लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए व प्रतिभाशाली व उत्कृष्ट विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। ये सभी आवश्यक कदम हिंदी व हिंदी भाषा की पढ़ाई को आधुनिक बनाने में न केवल सराहनीय होंगे, अपितु हिंदी भाषा की निरंतर वृद्धि में भी सहायक सिद्ध होंगे।

हिंदी भाषा की पढ़ाई के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में कुछ आवश्यक सुधार भी किए जाने चाहिए, ताकि हिंदी भाषा की कमियों व विसंगतियों को दूर किया जा सके।

आधुनिकीकरण से संबंधित भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित अभिलक्षण हैः

1. भाषा का युग–सापेक्ष होना।
2. भाषा का अपने स्वरूप में वैज्ञानिक तथा निर्विकल्पक होना।
3. सामाजिक स्थितियों एवं संदर्भों की अभिव्यक्ति में सक्षम होना।
4. अधुनातन तथा तकनीकी अभिव्यक्तियों से युक्त होना।
5. संक्षिप्तता एवं सूत्रात्मकता से युक्त होना।
6. नवीनतम एवं उपयोगी प्रयुक्तियों की अभिव्यक्ति में सक्षम होना।
7. व्यावहारिक और सामाजिक संकल्पनाओं से युक्त होना।

उपरोक्त मूल्यों के संदर्भ में ही हिंदी भाषा की पढ़ाई का आधुनिकीकरण संभव है।

भाषा का युग–सापेक्ष होना

आज की हिंदी का जो स्वरूप है, वही एक दशक पूर्व नहीं था, एक दशक आगे भी वहीं नहीं रहेगा। कहने का अभिप्राय यह है कि सभी स्तरों पर कुछ न कुछ भाषीय तत्त्व जुड़ेंगे और घटेंगे भी। भाषा की संरचना के स्तर पर होने वाली घटा–बढ़ी से हिंदी का जो स्वरूप निर्मित हो सकेगा, वहीं आधुनिकीकरण की श्रेणी में आएगा और यह प्रक्रिया एक सामाजिक आवश्यकता के रूप में सहज ही घटित होगी। भाषा में आधुनिकीकरण के कई मानदण्ड है। जब तक उन मानदण्डों को ठीक प्रकार से समझा नही जाएगा, तब तक हिंदी की पढ़ाई का आधुनिकीकरण करना भी एक असफल प्रयास होगा।

भाषा का अपने स्वरूप में वैज्ञानिक अथवा निर्विकल्पक होना

युग के अनुरूप भाषा का वैज्ञानिक अथवा निर्विकल्पक होना आधुनिकीकरण का केंद्रीय पक्ष है। बहुविकल्पीय होने पर वह अपनी युगीन अभिव्यक्ति में सक्षम नही हो सकती। इसके लिए युग की समस्त प्रयुक्तियों का इसमें समाहार आवश्यक है। यही कारण है कि हम समय–समय पर दूसरी भाषाओं के मुहावरों, लोकोक्तियों और ध्वनियों को इसमें समाहित करके इसे निर्विकल्पक बनाने का यत्न करते रहना चाहिए।

सामाजिक स्थितियों एवं संदर्भों की अभिव्यक्ति में सक्षम होना

भाषा में यह सामर्थ्य नए–नए तत्त्वों के संमजन से आता है। इन तत्त्वों के ग्रहण के समय भाषा की प्रकृति, उसकी समाहार–क्षमता (पाचन–शक्ति) और परिवेश को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। इसमें एक निश्चित अनुपात का होना भी आवश्यक है।

अधुनातन एवं तकनीकी अभिव्यक्तियों से युक्त होना

विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं कला–समूह के विषयों से संबंधित तकनीकी अभिव्यक्तियों में सक्षम होना भाषा के आधुनिकीकरण का एक प्रमुख अभिलक्षण है। जहाँ तक हिंदी भाषा का सवाल है, वह आज अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर लोकसाहित्य तक की सूक्ष्मतम अभिव्यक्तियों को वाणी देने में सक्षम है। यहीं नहीं, इन अभिव्यक्तियों के लिए विशेष समिति द्वारा उपयुक्त पारिभाषिक शब्दों का निर्माण भी किया जा चुका है। ये सभी शब्द आज कमोवेश प्रचलन में आ गए हैं और आते जा रहे हैं। यह हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी कारक सिद्ध होगा। ऐसे और भी अनेक कारक हैं, जो आज हिंदी की अपनी शब्दावली में पूरी तरह अभिव्यक्त होने की सामर्थ्य रखते हैं।

संक्षिप्तता एवं सूत्रात्मकता से युक्त होना

संक्षिप्तता से भाषा में निखार आता है और सूत्रात्मकता से उनकी अभिव्यक्तिगत अन्विति बनी रहती है। ये दोनों पक्ष अत्यंत कठिन किंतु भाषाई समाज के सेतु एवं हेतु हैं। हिंदी को यह गुण विरासत में संस्कृत से प्राप्त हैं।

उदाहरण स्वरूपः–

ध्वनि का आधुनिकीकरणः–

निम्न ध्वनियां आधुनिकीकृत हिंदी में आई हुई है।

जैसे क़ ख़ ग़ ज़ फ़ ॲ ऑ

शब्द के स्तर पर दो तरह का आधुनिकीकरण हुआ हैः–

पहला पूर्ण और दूसरा आंशिक

पूर्ण से तात्पर्य उन शब्दों से है, जो एक अथवा दो अलग–2 भाषाओं के प्रकृति – प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न है। आंशिक से तात्पर्य उन शब्दों से है, जो नए–नए क्षेत्रों में विभिन्न अभिव्यक्तियों एवं प्रयुक्तियों से युक्त हो रहे हैं।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

उदाहरण स्वरूपः—

पूर्ण शब्द कम + ज़ोर = कमज़ोर
खुश + दिल = खुशदिल
बे + शक = बेशक
खुश + मिज़ाज = खुशमिज़ाज
आंशिक — एशियाड, बुनियाद, इमरजेंसी, मानवश्रृंखला

वाक्य का आधुनिकीकरण :—

अंग्रेजी के प्रभाव के कारण आज भी वाक्य रचना ऐसी हो गई है, जिसे हिंदी कहना भी अटपटा सा लगता है। कुछ उदाहरण हैः—

अंग्रेजी शब्दों एवं पदबंधों का प्रयोग

1. सर मेरी हेल्प कीजिए, ये लाइफ एण्ड डेथ का प्रश्न है।
2. मैं नहीं जानता कि क्या राइट है क्या रॉंग है, यह कार्य तो विदिन वीक होना ही है।
3. ओ फादर यू आर ग्रेट।

वर्तनी का आधुनिकीकरण :—

डॉ रमेशचन्द्र मल्होत्रा इस पक्ष के शीर्षस्थ विद्वान है। 'मानक हिंदी का शुद्धिपरक व्याकरण' और मानक हिंदी के 'शुद्ध प्रयोग' उनके चिंतन के साक्षी है।

उदाहरण स्वरूप : आवाज़, पद्मिनी, ऊँचाई, शुद्धीकरण इंगलिश, उद्घाटन, विश्वविद्यालय, प्रियदर्शनी।

अतः वर्तमान समय में आधुनिकीकरण शब्द भाषा, भाषा के विकास तथा समाज की विभिन्न गतिविधियों व बदलती परिस्थितियों के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है।

आधुनिकीकरण को हिंदी विषय की पढ़ाई में शामिल कर, न केवल हम हिंदी भाषा को समृद्ध करेंगे, अपितु भावी पीढ़ी के लिए रोजगार के अनेक अवसर भी उपलब्ध करवाने में सक्षम हो सकेंगे। इस अभियान में प्राध्यापकों, शिक्षाविद्ो व पाठ्यक्रम तैयार करने वाली सभी समीतियों को मिलकर एक जुट प्रयास करना चाहिए तथा सरकार व प्रशासन द्वारा भी मातृभाषा, राजभाषा हिंदी के बढ़ावे हेतु प्रयास करना चाहिए।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved